

## हे मुसाफिर! नये वर्ष में संभल के चल...

जीवन सिर्फ मुसाफिरी नहीं "यात्रा" बननी चाहिए। प्रतिवर्ष 365 दिन समाप्त करके ज़िन्दगी के एक नये प्लेटफॉर्म पर जाने के लिए खड़ा कर देती है। ये हमें सोचना है कि हमें कौन सी गाड़ी पकड़नी है। जीवन में रस और रुचि का परिवर्तन न हो तो जीवन चीला-चालू और बिना रस वाला बन जाता है। इसलिए ही अंतिम मुसाफिरी के पहले मनुष्य को पैदल या पगडंडी की मुसाफिरी के साधनों को तैयार करना है। और वे साधन हैं - आध्यात्मिकता, नैतिकता, पवित्रता, सदाचार, प्रमाणिकता, परोपकार, सेवा और प्रेम!

एक ग्रामीण वृद्ध को आँखों में मोतिया होने के कारण ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था। उसने एक मुसाफिर को पूछा, "भाई साहब, मुझे गाड़ी में बैठना है, मुझे मेरी गाड़ी दिखायेंगे?"

मुसाफिर ने कहा, "इस स्टेशन से ब्रॉडगेज गाड़ियाँ जाती हैं और मीटर गेज भी, कहिए, कौन से गेज की गाड़ी में बैठना है? आपकी जानकारी के लिए

बता दूँ कि कुछेक गाड़ियाँ नैरोगेज स्टेशन से भी निकलती हैं।"

वृद्ध आदमी अपना सर खुजाने लगा। ब्रॉडगेज और नैरोगेज जैसे शब्द तो उसने सुना ही नहीं था। उसे अपने गांव के स्टेशन तक पहुँचाने वाली गाड़ी के बारे में जानना था।

हकीकत में मनुष्यों का जीवन में इसी प्रकार तीन गाड़ियों में बंटा हुआ है। इसी संदर्भ में 'पथदीप' में मकरंद भाई दवे का एक चिंतन समझने जैसा है। एक ब्रॉडगेज यानि कि चौड़े पाटे पर, मीटर गेज यानि कि मध्यम चौड़ाई वाले पाटे पर चलती गाड़ियों का और तीसरे नैरोगेज यानि कि छोटे पाटे पर चलती गाड़ियों का।

ज्यादातर मुसाफिर सामान्य व्यवहार चलाते हैं और साथ ही साथ अंतर खोज भी करते हैं। उन्हें इस दुनिया में कहने में आती बड़ाई आकर्षित करती है लेकिन उस तरफ वे चले नहीं जाते।

नैरोगेज के मुसाफिर उनके अनुपात में कम होते हैं। उनका मार्ग पहाड़ी पर चढ़ना है। बाहर से दिखती संकीर्णता के बदले उनके प्रवास में आकाश की विशालता और प्रकृति का सौन्दर्य निहारता है। बाह्य दौड़भाग के बजाय उनका लक्ष्य आत्मा का आनंद और मन की शांति होती है।

सार में कहें तो पहले मुसाफिर को हम टूरिस्ट यानि कि मनोरंजन खोजते मुसाफिर कहेंगे। दूसरे प्रकार के मुसाफिर को हम कहेंगे अपने उद्देश्य अर्थ निकले हुए प्रवासी।

तीसरे प्रकार के मुसाफिर को हम कहेंगे - यात्री। इस प्रकार के मुसाफिर कुछ लेने के लिए नहीं परंतु भाव और भक्ति अर्पण करने के लिए जाते हैं। इस प्रकार के समर्पण में श्रेष्ठता की चाबी समाई हुई होती है।

जीवन सिर्फ मुसाफिरी नहीं "यात्रा" बननी चाहिए। प्रतिवर्ष 365 दिन समाप्त करके ज़िन्दगी के एक नये प्लेटफॉर्म पर जाने के लिए खड़ा कर देती है। ये हमें सोचना है कि हमें कौन सी गाड़ी पकड़नी है। प्रत्येक वर्ष हमें 'नये गेज' पर दौड़ती गाड़ी पकड़ने की छूट होती है। जो जीवन में रस और रुचि का परिवर्तन न हो तो जीवन चीला-चालू और बिना रस वाला बन जाता है। अलग-अलग गेज पर दौड़ती गाड़ियाँ बदलकर अंत में तो हमें एक अज्ञात स्टेशन पर ही पहुँचना है, जहाँ कोई 'गेज' की गाड़ी कदाचित उपलब्ध नहीं होगी। न हाथी, न श्वान, पैदल मुसाफिरी करना ही संभव होगा। इसलिए ही अंतिम मुसाफिरी के पहले मनुष्य को पैदल या पगडंडी की मुसाफिरी के साधनों को तैयार करना है। और वे साधन हैं - आध्यात्मिकता, नैतिकता, पवित्रता, सदाचार, प्रमाणिकता, परोपकार, सेवा और प्रेम!

नूतन वर्ष भूतों को माइनस और सदगुणों को प्लस करने का वर्ष है। अमावस्या के अंधकार को अलविदा कहते वक्त बीते हुए वर्ष के प्रति भावपूर्ण आभार व्यक्त करना चाहिए क्योंकि बीता हुआ वर्ष अपना मेहमान था... मेहमान को निराशा रूप से नहीं, अंतर के उमंग के साथ विदा करना होगा।



- ब्र. कु. गंगाधर

## सच्ची भावना की लाइफ औरों को प्रेरणा देती है

मुरली पूरी होते ही जो वरदान और स्लोगन होता है, वह बहुत काम का होता है। धारणा के लिए सार भी अच्छा होता है। तो बाबा हम बच्चों को रोज़ाना ताजा खाना खिलाता है। ऐसे नहीं जो कल खिलाया पेट भर गया इसलिए आज ज़रूरत नहीं है। इस शरीर को रोज़ाना ताजा भोजन चाहिए, कल वाला खायेंगे तो...। रोज़ ताजा भोजन करेंगे तो फ्रेश रहेंगे। सरेण्डर मरे के बराबर हैं क्योंकि यह तन मन धन सम्बन्ध मेरा नहीं। तो हर एक अपने आपको चेक करे कि सम्बन्ध-सम्पर्क में आते भी यह ऐसे क्यों करता, क्या करता? क्वेश्चन तो नहीं! जिस घड़ी क्वेश्चन उठाया माना प्रश्नों की क्यू लग जायेगी। कभी कोई कहेगा कोई प्रश्न नहीं है, मैं ठीक हूँ, दिल से कहेगा तो चेहरा बतायेगा परन्तु कोई क्यू लगायेगा। क्वेश्चन माना क्यू में खड़ा होना, आन्सर मिलेगा तो भी नहीं सुनेगा। सुने तो आगे बढ़े ना। पंख टूटे पड़े हैं, भले बाबा कहता है चल उड़ जा रे पंछी... पर पंछी तभी उड़ेगा जब देश बेगाना है। मेरा नहीं है, पराया है। संगम का यह समय बताता है कि यह देश पुराना है, पराया है। बाप नया बनाने आता है। बाप कोई पुराने को रिपेयर करने नहीं आता है, नया बनाने आता है।

तो देश देखो, सम्बन्ध देखो, यह भी

हमारा नहीं, यह भी हमारी नहीं, कुछ हमारा नहीं। नाम मात्र हम एक साथ बैठे हैं लेकिन अंदर है, उमंग-उत्साह के पंख से बड़ा अच्छा लगता है। बाबा की दृष्टि से उस पार चले जाते हैं, तो बाबा कभी कहता है मेरे को याद करो, कभी कहता है मेरे घर को याद करो। बैठा यहाँ सामने है, पर जहाँ से जिस घर से आया हुआ हूँ, वो तेरा भी घर है। तो याद में हर एक का भिन्न-भिन्न प्रकार का अनुभव होगा। कभी अपने को आत्मा समझने से बाबा को याद करना सहज है। कभी आत्मा समझने में टाइम लगता है, पर बाबा की याद से आत्मा समझ जाते हैं। कभी यह बहुत अच्छा है, आत्मा हूँ... बाबा ने खँच लिया, कभी बाबा की खँच से ऑटोमेटिक आत्म-अभिमान बन जाते हैं। मतलब हमको बाबा को याद करना है, कैसे भी करके, याद करना नहीं पर याद में रहना है। ऐसी याद में रहना है जिसमें आत्मा प्योर बनती जाये, कोई घड़ी ऐसी नहीं जो याद करना पड़े।

बाबा की सब बातें अच्छी लगती हैं, पर कोई कोई बातें बहुत अच्छी लगती हैं। निश्चय बुद्धि से विजय हुई पड़ी है, यह अनुभव है। निश्चय बुद्धि से, कभी क्वेश्चन नहीं उठने से जो भावना से हम कार्य करते हैं, वह सफल होता है। सच्ची भावना, अटल विश्वास की लाइफ औरों को प्रेरणा देने वाली

होती है, इसमें कमाल है निश्चय की या भावना की या पहले से ही अंदर से ड्रामा की नॉलेज में बहुत विश्वास है



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

कि हुआ पड़ा है पर मुझे अभी करना है, तो अच्छा हो जाता है। ऐसे नहीं जो ड्रामा में होगा, यह भी नहीं कहो, बोलने की बड़ी शुद्ध भाषा हो, जो करनी कथनी एक हो। करनी एक कथनी दूसरी, यह जँचता नहीं है। पहले करना है, जो करता है उसको मुख से कहने की ज़रूरत नहीं है। करना है, समय ऐसा है, समय का बहुत कदर है, पढ़ाने वाला बाबा हमें पढ़ा रहा है, हम पढ़ रहे हैं। मुख्य बात है शिवबाबा प्रजापिता ब्रह्मा के तन में बैठके पढ़ाता है, शिवबाबा को यह नशा नहीं है, विश्व की बादशाही मुझे मिलने वाली है। वो देने वाला है, ब्रह्मा बाबा लेने वाला है।

बाबा चला रहा है पर जो बाबा की श्रीमत पर चले हैं, उसकी भी अंदर प्यार भरी सकाश है। ताकि सबको पता चले हमारे फाउण्डेशन में स्थापना के कार्य में असली साथी कौन है? बाबा अकेला नहीं है, शिवबाबा बीजरूप है। ब्रह्माबाबा को बीजरूप नहीं कहेंगे।



दादी हृदयमोहिनी अति मुख्य प्रशासिका

## समस्या को ना रख, उसी समय उसका हल करो

जब हमारी अवस्था ठीक होती है तो सब अच्छा लगता है। जब अवस्था थोड़ी भी नीचे ऊपर होती है तो अच्छा भी बुरा लगता है। उस समय मन समझ नहीं सकता है कि यह अच्छा है या बुरा है। उस समय समझ भी कम हो जाती है क्योंकि हमने छोटेपन से सब प्रकार के अनुभव देखे हैं, छोटों का भी, बीच वालों का भी, अभी फिर वही बड़े हुए तो उन्हें निमित्त बड़ा कहते हैं, उनको भी देखा है। तो अनुभव तो भिन्न-भिन्न है। कोई हैं जो बहुत साधारण चलते हैं ऐसा भी अनुभव है। तो सभी खुश हैं? हमको तो यही रहता है कि ऐसा न हो कि यहाँ रहते भी खुश नहीं हों। खुशी ज़रूर होनी चाहिए। खुशी के बिना यहाँ रहना ठीक नहीं है। उसके लिए क्या करना चाहिए? जिस किसी में फेथ हो तो उसकी राय ले सकते हैं।

लेकिन शक्ल पर खुशी ज़रूर होनी चाहिए। शक्ल सोचने वाली न हो, ऐसे नहीं जहाँ बैठे वहाँ सोच में चले जायें, ऐसा नहीं। खुशी नहीं जाये। बात, बात से भले करें, लेकिन खुशी नहीं जाये। खुशी छोड़के और फिर सोचते हैं तो रिज़ल्ट क्या हुई? खुशी तो चाहिए ना, सब इस बात में तो ठीक हैं ना! तो जिस बात में खुशी कभी गुम होती है उसका पुरुषार्थ करो क्योंकि हरेक का स्वभाव, हरेक का वर्क अपना-अपना है। उसके अनुसार जैसा डायरेक्शन मिले, वैसा करना चाहिए। इसमें कभी-कभी पूछना भी

पड़ता है। बाकी हैं ठीक, जनरल क्या कहेंगे, ठीक हैं! ठीक होना ही चाहिए, बाबा ने इतने बड़े भवन बनाके दिये हैं, ऐसे तो हमने देखा फॉरेन में जो रहते हैं, दिलपसंद वाले उनके रहने का तो देखना ही मुश्किल होता है। उनको देख करके और ही तरस आता है, जब बंधन में आ जाते हैं, उस समय उनकी शक्ल देखनी चाहिए। तो सभी खुश हैं? हमारी खुशी कभी नहीं जाये बस क्योंकि हम भगवान के बच्चे हैं डायरेक्ट। कोई प्रॉब्लम हो तो उसे पुराना नहीं करो, कभी मिलेगा टाइम तो बता देंगे, नहीं, क्योंकि इसमें भी इतना टाइम जो गंवाया वो कहाँ गया? वो तो खुशी कम हुई ना। हम तो देखते हैं बाबा ने हमारे लिए क्या नहीं सोचके किया है, हर छोटी बात को सोच करके यह रहने का स्थान बनाया है।

शुरु से ही हमने देखा है कि बाबा के अंदर यही रहता है कि बच्चों को कोई दुःख नहीं मिले, तो अभी भी यह जिम्मेवारी बड़ों की है और बताने वालों के ऊपर भी है, सहन करना समझे बहुत ज़रूरी है और सहन नहीं होता, अंदर संकल्प भी चलता है। दुविधा में रहते हैं कि करें, नहीं करें..., तो वो लाइफ नहीं है। लाइफ माना खुशी। कोई सिर पर बोझ नहीं। कोई न कोई बीच-बीच में बोझ आता है, ऐसे नहीं। लेकिन उनको सोच सोच के बड़ा नहीं बनाओ। परन्तु कोई की नेचर कैसी होती है, कोई की कैसी... मानो आपमें सहनशीलता की टोटली नेचर कम है और मैं आपको वो प्रोग्राम देती हूँ, जो सहन करना ही है तो कैसे चलेगा! पहले समझना चाहिए जिसको देते हैं उनकी नेचर, उनके आस-

पास रहने वाले साथी, यह सब पहचान करके पीछे वो काम दें, तो सब ठीक है! अच्छा है। तो यहाँ बाबा ने रखा है, यह कोई कम भाग्य नहीं है। किसी भी कारण से आप आ गये हैं लेकिन यह भाग्य तो बना ना। पहली बात तो है खुश रहते हो कि यहाँ रहते भी कई प्लान बनते हैं, यह करें, यह करें... यह अपनी सम्भाल ज़रूर करो। अगर मानो ऐसा होता भी है तो स्पष्ट किसी को सुनाना चाहिए। बीच में ऐसे फेथफुल कोई हों तो उससे मिलके, राय करके उसका सहयोग ले सकते हैं, अच्छा है तो। ऐसे नहीं संग ऐसा लेवें जो और ही उसको डुबा देवे। तो ठीक हैं सभी, हाँ तो ज़रूर करेंगे और हाँ करना भी चाहिए। जब बाबा के घर में रहते हैं, परिचय देते हो, तो कहाँ के हो बाबा के घर में रहने वाले हैं। कम थोड़ेही हैं, यह भाग्य मिलना भी कम नहीं है। हम लोग तो छोटेपन में ही आ गये, लेकिन हमने देखा है जो पीछे-पीछे बने हैं एकज़ाम्पुल तो हैं ना, तो सोच समझके करना चाहिए। अपने लाइफ के मालिक होके सोचो, ऐसे नहीं इसने कहा ना, इसका देखा है ना, बस इसमें फर्क हो जाता है।

अभी के समय अनुसार मैं समझती हूँ, बाबा की रोज़ की मुरली ही हमारे लिये डायरेक्शन है, वरदान है। तो जो बाबा के इशारे होते हैं वो मुरली में ही होते हैं, अगर मुरली को आप पढ़ो उस ध्यान से, तो इसमें आज बाबा ने क्या कहा, अगर कोई कमी है तो वो अटेन्शन ज़रूर देना है और कोई को भी निमित्त बनाने के बजाए बाबा ही निमित्त अच्छा है लेकिन सिर्फ अटेन्शन देना।